हिन्दी साप्ताहिक

न्यूज आइकॉन

T.C. NO. MAHHIN10172

संपादक - मुर्तुजा मामाजीवाला | ईमेल: newsicon2021@gmail.com | मूल्यः रु. - 2/-

वर्षः 2 | अंकः 07 | पृष्ठः 8 | शुक्रवार,29 जुलाई से 04 अगस्त 2022

एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे को भेजे शुभकामना संदेश में नहीं लिखा शिवसेना प्रमुख

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने पूर्व मुख्यमंत्री एवं शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे को उनके जन्म दिन पर ट्वीटर संदेश के जरिए बधाई दी है। बुधवार को उद्धव ठाकरे ने अपने जीवन के 62 वर्ष पूरे किए हैं। एकनाथ शिंदे ने बुधवार को सुबह ही अपने ट्वीटर पर लिखा कि महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय उद्धव ठाकरे को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। मैं मां जगदंबा से उनके निरोगी दीर्घजीवन के लिए प्रार्थना करता हूं। बता दें कि इस ट्वीट में शिंदे ने उद्धव ठाकरे के नाम से पहले ह्यपूर्व मुख्यमंत्रीह्ल तो लगाया है, लेकिन ह्यशिवसेना प्रमुखह्ल नहीं लगाया है। जबकि कुछ दिनों पहले शिवसेना की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी घोषित करते हुए शिंदे ने अपने लिए ह्यमुख्य नेताह्ल का पद लिखा था, और शिवसेना प्रमुख पद का उल्लेख भी नहीं किया था। इन दिनों राज्य विधानसभा एवं लोकसभा में दो तिहाई सदस्यों को अपने गुट में शामिल करने के बाद एकनाथ शिंदे अब संगठन पर भी कब्जे के लिए प्रयासरत हैं। शिवसेना के दोनों गुटों की लड़ाई सर्वोच्च न्यायालय के साथ-साथ अब चुनाव आयोग के सामने भी पहुंच चुकी है। वहीं, असली शिवसेना के रूप में मान्यता के लिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले गुट की याचिका पर चुनाव आयोग की कार्यवाही के विरुद्ध उद्धव ठाकरे गुट की नई याचिका पर

सुप्रीम कोर्ट एक अगस्त को सुनवाई करने पर सहमत हो गया है। ठाकरे गुट की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने प्रधान न्यायाधीश एनवी रमणा, जस्टिस कृष्ण मुरारी और जस्टिस हिमा कोहली की पीठ से अनुरोध किया कि चुनाव आयोग के समक्ष जारी कार्यवाही पर रोक लगाने की जरूरत है क्योंकि उसका यहां मामले की सुनवाई पर असर पड़ेगा।इससे पहले सामना के कार्यकारी संपादक एवं राज्यसभा सदस्य संजय राउत के सवालों का जवाब देते हुए पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कहा है कि लोगों पर आंख मूंदकर भरोसा करना ही मेरी गलती थी। लोगों ने उस समय मुझे सत्ता से बेदखल करने की साजिश रची, जब मैं बहुत बीमार था। उद्धव ने यह बात शिवसेना के मुखपत्र सामना को दिए साक्षात्कार में कही है।इस दौरान उद्धव ठाकरे ने भाजपा पर जमकर प्रहार किया। उन्होंने भाजपा का नाम लिए बिना कहा कि बालासाहब ठाकरे ही इनको संबल दे रहे थे।

शिवसेना पर कब्जे की तैयारी, पार्टी के चुनाव चिह्न पर एकनाथ शिंदे गुट ने किया चुनाव आयोग में दावा

मुंबई : महाराष्ट्र में शिवेसना के उद्धव ठाकरे गुट को झटके पर झटका लग रहा है। पहले पार्टी से विधायक और सांसद अलग हुए। अब पार्टी पर कब्जे की तैयारी चल रही है। एकनाथ शिंदे धड़े ने चुनाव आयोग (ईसी) को पत्र लिखकर पार्टी का धनुष-बाण चुनाव चिन्ह आवंटित करने की मांग की है। यह जानकारी समाचार एजेंसी पीटीआई ने दी है। चुनाव आयोग को भेजे एक पत्र में शिंदे गुट ने असली शिवसेना होने का दावा किया है और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर द्वारा दी गई मान्यता का हवाला दिया है। महाराष्ट्र में शिवसेना के 55 में से कम से कम 40 विधायकों ने बागी नेता शिंदे को समर्थन देने की घोषणा की, जिन्होंने 30 जून को राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। एकनाथ शिंदे ने मंगलवार को लोकसभा में राहुल शेवाले को पार्टी के फ्लोर लीडर और भावना गवली को मुख्य सचेतक बनाने की घोषणा की। लोकसभा अध्यक्ष ने राहुल शेवाले को संसद के लोकसभा में शिवसेना के नेता के रूप में मान्यता प्रदान की। पिछले महीने शिवसेना विधायक दल में विभाजन के बाद उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना को मंगलवार को एक नया झटका लगा था, जब उनके 19 लोकसभा सदस्यों में से 12 ने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को अपना समर्थन दिया था। चुनाव चिन्ह पर दावा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को महाराष्ट्र राज्य चुनाव आयोग को स्थानीय निकायों के चुनावों को दो सप्ताह के भीतर अधिसूचित करने का निर्देश दिया है। महाराष्ट्र में बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) सहित कई नगर निकायों में चुनाव होने हैं, जो यह संकेत देगा कि शिवसेना के किस गुट को लोकप्रिय समर्थन हासिल है। इससे पहले शिवसेना के उद्धव ठाकरे धड़े ने चुनाव आयोग को पत्र लिखकर अनुरोध कहा था कि पार्टी के नाम और उसके चुनाव चिह्न पर दावों के लिए कोई भी निर्णय लेने से पहले उसके विचार सुनें।

Mental health matters.

Whats App: +91 720421116

* I don't prescribe medicines

INDIVIDUAL COUNSELING

TEEN COUNSELING

COUPLES/MARRIAGE COUNSELING

Dr Vihar Sanyal

PSYCHOTHERAPIST

WWW.MINDFACTORY.CO.IN

Know Your Past, Present & FUTURE - with "My Miracles of Numerology"

Sandhiya Mehhta

Sandhiya Mehhta is a world renowned Numerologist, Vastu expert, Spiritual Healer with activated third eye. Her knowledge, wisdom and insight has helped innumerable people.

Titled as "Indian Nostradamus" and winner of many awards worldwide, she says "MY CLIENT'S REWARDS ARE MY ONLY AWARDS"

Sandhiya Mehhta is the only successful numerologist that predicts your future and helps you mould your present with scientific remedies that are unique and developed over 25 years of research.

"No stones, signature changes and blind faith can uplift you and eliminate problems, but my system of remedy has shown tremendous results for people from every walk of life be it academics, sports, celebrities or politics"

"I will consult, inform, empower and guide you to a better present and future"

Famous for Exclusive research for the trio- 4, 7, 8 - "People born on this are such intelligent & hardworking individuals but need little help to realise their full destiny which I do through my remedies and research. It's a beautiful cocoon to butterfly journey".

Book your consultation NOW

+919819921673, +919769071673

www.yellowsoul.in / Email: contact.yellowsoul@gmail.com

Sandhiya.mehhta @sandhiyamehta

All credit cards are accepted

बच्चे और करियर में से एक के लिए मां को मजबूर नहीं किया जा सकता: बॉम्बे हाईकोर्ट

मुंबईः बॉम्बे हाईकोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में आदेश दिया है कि किसी भी मां को करियर और बच्चे के बीच किसी एक को चुनने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। यह उस महिला के ऊपर निर्भर करता है कि वह दोनों में से एक या दोनों को चुनेगी। इसके साथ ही संबंधित मामले में हाई कोर्ट ने महिला को अपने साथ बच्चे को विदेश ले जाने की इजाजत दे दी है।

दरअसल, यह मामला पुणे की एक कंपनी में काम करने वाली एक महिला से संबंधित है। कंपनी ने महिला को पोलैंड में एक सीनियर पोजिशन ऑफर किया। इसके बाद पति ने अपनी छोटी बेटी को विदेश साथ ले जाने पर आपत्ति जताई थी। इसके बाद महिला ने बॉम्बे हाईकोर्ट का रुख कर लिया था। महिला की याचिका पर सुनवाई करते हुए बॉम्बे हाईकोर्ट ने यह फैसला सुनाया है। बॉम्बे हाईकोर्ट जस्टिस भारती डांगरे की सिंगल बेंच इस याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिका में महिला ने अपनी नौ साल की बेटी के साथ पोलैंड में जाकर रहने की अनुमति मांगी थी। महिला के पति ने इस याचिका का विरोध करते हुए दावा किया था कि अगर बच्चे को उससे दूर ले जाया गया तो वह उसे फिर से नहीं देख पाएगा। पति ने आरोप लगाया कि महिला का पोलैंड में बसने का एकमात्र मकसद पिता-पुत्री के बंधन को तोड़ना है।

हालांकि इसके साथ ही हाईकोर्ट ने यह भी कहा कि उस बच्ची को पिता से मिलने के लिए नहीं रोका जाएगा। अदालत ने महिला को छुट्टियों के दौरान अपनी बेटी के साथ भारत आने का निर्देश भी दिया। जिससे कि पिता अपनी बच्ची से मिल पाए। हाईकोर्ट में पति ने यह भी कहा कि वह और उसका परिवार भारत में बच्चे की देखभाल करेगा, लेकिन उनकी इस बात को नकार दिया गया। हालांकि इस फैसले के बाद पति की तरफ से वकील ने बाद में कहा कि वे अब हाईकोर्ट के इस फैसले को चुनौती देने के लिए सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर करेंगे। एक रिपोर्ट के मुताबिक इससे पहले महिला ने पुणे के फैमिली कोर्ट ने पति की याचिका पर पत्नी को अपनी बेटी के साथ भारत से बाहर ले जाने से रोक दिया था। इसके बाद महिला ने इस आदेश को बॉम्बे हाईकोर्ट में चुनौती दी थी।

बीजेपी और शिंदे गुट के बीच नहीं बन रही बात? एकनाथ का दिल्ली दौरा रद्द, कैबिनेट विस्तार पर ग्रहण

मुंबई। महाराष्ट्र में नई सरकार के गठन का अब काफी समय बीत चुका है, लेकिन मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अभी तक अपनी कैबिनेट का विस्तार नहीं किया है। बुधवार को मुख्यमंत्री इसे अंतिम रूप देने के लिए दिल्ली जाने वाले था, जहां उनकी मुलाकात बीजेपी के आलाकमान से हो सकती थी। लेकिन अंतिम समय में उन्होंने अपना दौरा रद्द कर दिया। हालांकि, उन्होंने इसके कारण नहीं बताए हैं।

एकनाथ शिंदे ने हाल ही में कहा था कि वह अगले तीन दिनों में अपनी कैबिनेट का विस्तार कर लेंगे, लेकिन दिल्ली दौरा टलने के बाद फिर कयासों के बाजार गर्म हो गए हैं। लोग अब शिंदे गुट और बीजेपी के बीच के समीकरण पर भी चर्चा करने लगे हैं। आपको बता दें कि सीएम बनने के बाद एकनाथ शिंदे कई बार दिल्ली का दौरा कर चुके हैं। अधिकांश बैठक के बाद कैबिनेट विस्तार पर अंतिम मुहर की बात कही जाती रही है। एकनाथ शिंदे के विद्रोह को एक महीने से अधिक समय बीत चुका है। साथ ही उनके शपथ ग्रहण समारोह को भी कई दिन हो चुके हैं। 30 जून को एकनाथ शिंदे ने मुख्यमंत्री और देवेंद्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। इसके बाद हर बार यह कहा जा रहा है कि शिंदे और फडणवीस जल्द ही मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे, लेकिन अभी तक समय नहीं मिला है इस बीच विपक्ष ने अपने मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं करने के लिए राज्य सरकार की आलोचना भी की है। विदर्भ-मराठवाड़ा में बारिश से बड़े पैमाने पर कृषि को नुकसान पहुंचा है। मंत्रिपरिषद का विस्तार न होने के कारण किसी भी जिले में संरक्षक मंत्री नहीं है। साथ ही विपक्ष ने सरकार की ओर से मदद नहीं पहुंचने की भी आलोचना की है। साथ ही राज्य सरकार का मानसून सत्र अभी तक नहीं हुआ है।

शिवसेना में टूट पर उद्धव ठाकरे बोले- सुप्रीम कोर्ट का फैसला देश में लोकतंत्र का भविष्य तय करेगा

मुंबईः शिवसेना अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने गुरुवार को कहा कि उनके और एकनाथ शिंदे के गुटों की ओर से दायर याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला भारत में लोकतंत्र के भविष्य का निर्धारण करेगा। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनीति में उतार-चढ़ाव लगा रहता है। मुझे खुशी है कि विभिन्न विचारधाराओं के लोग शिवसेना से जुड़ रहे हैं। संविधान की रक्षा करना समय की मांग है ठाकरे पर्यावरण कार्यकर्ता सुषमा अंधारे और प्रशांत सुर्वे को पार्टी में शामिल करने के बाद यहां अपने आवास ह्यमातोश्रीह्न में शिवसेना कार्यकर्ताओं से बात कर रहे थे। सुर्वे शिवसेना के बागी गुट की सांसद भावना गवली के पूर्व पति हैं। ठाकरे ने कहा, ह्यशिवसेना कानूनी और संवैधानिक लड़ाई लड़ रही है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला न केवल पार्टी का भविष्य बल्कि देश में लोकतंत्र का भविष्य भी तय करेगा। उन्होंने कहा कि शिवसेना का हिंदुत्व का एजेंडा राष्ट्रवादी है।

मुख्यमंत्री शिंदे का समर्थन करने वाले बागी विधायकों व सांसदों पर निशाना साधते हुए ठाकरे ने कहा कि शिवसेना ने साधारण लोगों को असाधारण बनने में मदद की लेकिन उन कानून निमार्ताओं ने पार्टी छोड़ दी। उन्होंने कहा, अब और सामान्य लोगों की तलाश करने और उन्हें उनकी क्षमता का एहसास कराने में मदद करने का समय है। हम अपनी असली शिवसेना का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। मैं ग्रामीण महिलाओं की नेतृत्व क्षमता पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं।

संपादकीय

संपादक - मुर्तुजा मामाजीवाला

पानी कम बरसा तो बढ़ेगा संकट

देश भर में भले ही मानसूनी बारिश सामान्य से ज्यादा हुई है, लेकिन बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश सहित सात राज्यों के अन्नदाता सूखे की आशंका से घबरा गए हैं। इन सूबों में अब तक इतना पानी नहीं बरसा है कि खेतों में धान की रोपाई के लिए जरूरी जल का जमाव हो सके। 15 जुलाई तक के आंकड़े बताते हैं कि देश भर में 27 लाख हेक्टेयर कम रकबे पर धान की बुआई की गई है। इसका मतलब है कि चावल का उत्पादन कम हो सकता है। और, अगर ऐसा हुआ, तो कम से कम दो तरह की समस्याओं से हमारा सामना होगा। पहली समस्या यह कि देश भर में महंगाई बढ़ सकती है। पिछले सीजन में गेहूं का कम उत्पादन हुआ था। सरकार भी 1.87 करोड़ टन गेहूं खरीद सकी, जबकि पूर्व में चार करोड़ टन के आसपास की खरीद की जाती थी। ऐसे में, यदि चावल की पैदावार भी कम होती है, तो बाजार में इसकी कमी हो जाएगी, जिससे इसकी कीमत बढ़ सकती है। इसका दबाव स्वाभाविक तौर पर गरीब व वंचित तबकों पर सर्वाधिक होगा।

दूसरी तरह की समस्या गरीब कल्याण योजना से जुड़ी है। अभी सरकार ने सितंबर तक इस योजना के तहत जरूरतमंदों को अनाज मुहैया कराने की बात कही है। अगर धान का उत्पादन कम होगा, तो चावल की सरकारी खरीद भी कम होगी। इससे खाद्य सुरक्षा के मूल मकसद को पाना मुश्किल होगा। हालांकि, अभी हम खाद्य संकट से नहीं जूझ रहे, लेकिन सावधानी जरूरी है। सरकारी गोदामों में पर्याप्त अनाज होना चाहिए। ऐसा किया जाना सिर्फ राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लोगों को राहत पहुंचाने के लिए जरूरी नहीं है, बल्कि इसलिए भी जरूरी है कि यदि महंगाई बढ़ती है, तो खुले बाजार में अनाज बेचकर सरकार इसके दाम नियंत्रित करे। हर साल सरकार खुले बाजार में अनाज बेचती है, इस बार संभवतः उसे ज्यादा अनाज मुहैया कराना पड़ सकता है।

साफ है, खाद्य सुरक्षा को लेकर हमें खास सावधानी बरतनी होगी। अभी दुनिया भर में करीब 70 देश खाद्य पदार्थों की महंगाई से मुकाबला कर रहे हैं, और रूस-यूक्रेन जंग ने वैश्विक आपूर्ति शृंखला को इस कदर प्रभावित किया है कि विकासशील देशों में खाद्यान्न संकट गहराने लगा है। हम ऐसे किसी संकट में न फंसे, इसके लिए केंद्र सरकार को विशेष पहल करनी होगी। यहां यह तर्क बेमानी है कि चावल का निर्यात रोककर सरकार जरूरी अनाज का भंडारण कर सकती है। वास्तव में, हम बासमती चावल का ही निर्यात करते हैं, जिसका खाद्य सुरक्षा में बहुत ज्यादा महत्व नहीं है। हमें मुख्य अनाज का भंडारण करना होगा। संभव हो, तो प्रधानमंत्री खाद्य सुरक्षा योजना को सितंबर से बढ़ाकर कम से कम मार्च, 2023 तक किया जाना चाहिए, ताकि महंगाई की मार झेल रही जनता को कुछ हद तक राहत मिल सके। दिक्कत यह है कि मौसम पर हमारा कोई वश नहीं है। उम्मीद यही थी कि इस साल अच्छी-खासी बारिश होगी। मगर ऐसा नहीं हुआ। दुर्भाग्य से इसका असर उन राज्यों में दिख रहा है, जहां चावल का उत्पादन अधिक होता है। इसके बरअक्स, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान जैसे राज्यों में अच्छी बारिश हो रही है, जहां खेती-बाड़ी से जुड़ा बुनियादी ढांचा भी काफी बेहतर है। ऐसी स्थिति में हमें उत्तर भारत के किसानों को पर्याप्त सुरक्षा देनी होगी। इसके लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं, जैसे सरकार यहां के किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अनाजों की खरीद करे। इससे अन्नदाताओं की आय बढ़ेगी। बिहार जैसे राज्यों में अनाजों की बिल्कुल भी सरकारी खरीद नहीं होती, जबकि झारखंड में नाममात्र की खरीदारी की जाती है। उत्तर भारत के ये राज्य कृषि के मामले में तो पीछे हैं ही, यहां गरीबों की संख्या भी तुलनात्मक रूप से ज्यादा है। ऐसे में, किसानों को फसल की वाजिब कीमत देने के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि खाने और खरीदने की उनकी क्षमता बरकरार रहे।

कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए राष्ट्रपति पद तक पहुंची द्रौपदी मुर्मु

1997 में उडीसा की रायरंगपुर ज़िले में नगर पालिका के पार्षद का चुनाव जीत कर अपने राजनीतिक सफर की शुरूआत करने वाली श्रीमती द्रौपदी मुर्मू अब भारत की 15वीं राष्ट्रपति निर्वाचित हो चुकी हैं। स्वतंत्र भारत के इतिहास में उनके पूर्व अब तक जो 14 राष्ट्रपति हुए हैं उन सभी से वे आयु में छोटी हैं। वे देश की ऐसी पहली राष्ट्रपति हैं जिनका जन्म देश के अत्यंत पिछड़े राज्य उड़ीसा में हुआ था। उन्होंने श्रीमती प्रतिभा पाटिल के बाद देश की दूसरी महिला राष्ट्रपति बनने और आदिवासी समुदाय से चुनी जाने वाली प्रथम महिला राष्ट्रपति होने का गौरव भी हासिल किया है। 20 जून 1958 को उडीसा के एक किसान परिवार में जब उनका जन्म हुआ तब कौन जानता था कि साधारण किसान परिवार की यह बेटी एक दिन देश की प्रथम नागरिक बनने का गौरव अर्जित कर इतिहास रच देगी लेकिन अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर उन्होंने अपने मार्ग की सारी बाधाओं को पराजित करते हुए विषम परिस्थितियों में भी एक के बाद एक सफलता के अनेक महत्वपूर्ण सोपान तय किए।स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद पहले राज्य सरकार के सिंचाई और बिजली विभाग में जूनियर असिस्टेंट और कुछ वर्षों तक मानसेवी शिक्षक 'के पद पर भी कार्य किया जहां उन्होंने संपूर्ण निष्ठा के साथ अपने कार्यपालन किया। 1997 में उन्होंने रायरंगपुर ज़िले में पार्षद का चुनाव जीत कर राजनीतिक कैरियर की शुरूआत की। बाद में वे जिला परिषद की उपाध्यक्ष भी बनीं। 1997 में राजनीति में आने के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और जल्द ही उनकी गणना राज्य के निष्ठावान् और सिद्धांतवादी राजनेताओं में प्रमुखता से होने लगी। उड़ीसा में भाजपा और बीजद की संयुक्त सरकार में उन्होंने दो बार महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री पद के दायित्व का भी निर्वहन किया। श्रीमती मुर्मू ने महिलाओं और बालिकाओं की भलाई के लिए अनेक उल्लेखनीय कदम उठाए। उन्हें उड़ीसा विधानसभा के सदस्य के रूप में सदन के अंदर अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ विधायक को दिए जाने वाले नीलकंठ अवार्ड से भी नवाजा गया। श्रीमती मुर्मू को केंद्र में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने राष्ट्रपति चुनाव में अपना उम्मीदवार बनाया था

लेकिन उन्हें शिवसेना, बीजू जनता दल और वाई एस आर कांग्रेस , बसपा, अकाली दल ने भी अपना समर्थन प्रदान किया जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी पूर्व केंद्रीय मंत्री और पूर्व भाजपा नेता यशवंत सिन्हा को सपा , तृणमूल कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का समर्थन मिला हुआ था।

राष्ट्र पति चुनाव के लिए मतदान की तारीख निकट आते आते यह सुनिश्चित हो चुका था कि वे बहुत बड़े अंतर से जीत हासिल करेंगी। 21जुलाई की शाम को मतगणना के परिणामों में श्रीमती मुर्मू की प्रचंड विजय ने विपक्षी दलों के मतभेदों को एक बार फिर उजागर कर दिया। श्रीमती मुर्मू को 64 प्रतिशत मत प्राप्त हुए जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी यशवंत सिन्हा विपक्ष के ही पूरे मत हासिल करने में असफल रहे जो इस बात का परिचायक है कि कि राष्ट्रपति चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की रणनीति पूरी तरह सफल रही। आगामी 25 जुलाई को देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन होने जा रही श्रीमती मुर्मू पूर्व में झारखंड की राज्यपाल रह चुकी हैं।इस पद पर उन्होंने 6 साल एक माह के अपने कार्य काल में यद्यपि खुद को विवादों से दूर रखा परंतु राज्यपाल के रूप में उनके साहसिक फैसले उस समय चर्चा का विषय बन गए जब उन्होंने विधानसभा में पारित दो विवादास्पद विधेयक लौटा लिए जिनका झारखंड में व्यापक विरोध हो रहा था। राज्य पाल पद पर कार्य करते हुए पदेन कुलाधिपति के रूप में उन्होंने कालेजों में छात्रों के आनलाइन नामांकन के लिए चांसलर पोर्टल शुरू करवाया जिससे कालेजों में प्रवेश के इच्छुक छात्रों को प्रवेश संबंधी दिक्कतों से छुटकारा मिला। आदिवासी समुदाय के हित सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने राज्य पाल की हैसियत से राज्य सरकार को एकाधिक बार सीधे तौर पर निर्देशित करने में कोई संकोच नहीं किया। उनके अंदर मौजूद संगठन क्षमता और नेतृत्व कौशल ने उन्हें भारतीय जनता पार्टी में आदिवासी मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद तक पहुंचाया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने आदिवासी समुदाय की लोकप्रिय नेता की छवि बनाने में सफलता अर्जित की। 2009 से 2014 की अवधि में श्रीमती मुर्मू को अपने व्यक्तिगत जीवन में तीन त्रासदियों का सामना करना पड़ा जब पहले उनके दो जवान बेटों और फिर उनके पति ,भाई और मां को क्रूर काल ने उनसे छीन लिया परंतु इस जीवट महिला ने अपना धैर्य और साहस नहीं खोया और असीम दुख की इस घड़ी में वे अपनी इकलौती बेटी इतिश्री का एक मात्र सहारा बन गई।उन पांच वर्षों के दौरान घटी त्रासदियों के कारण वे डिप्रेशन में चली गईं तब उन्होंने खुद को संभालने के लिए आध्यात्मिक संस्थान ब्रह्म कुमारी आश्रम से जुड़ने का विकल्प चुना और अध्यात्म और योग की सहायता से डिप्रेशन पर विजय हासिल की। इसके बाद उन्होंने तय कर लिया कि वे अपना शेष जीवन गरीब, सर्वहारा,दीन दुखी और कमजोर लोगों के जीवन में खुशहाली लाने के लिए समर्पित कर देंगी। उनका कहना है कि इंसान को विषम परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारना चाहिए । श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने ऐसी विषम परिस्थितियों में भी अपना हौसला बनाए रखा उससे यह भली भांति प्रमाणित हो जाता है कि वे मजबूत इरादों वाली जीवट महिला हैं इसलिए चुनाव के दौरान उनकी यह आलोचना कतई उचित नहीं थी कि वे कमजोर राष्ट्र पति साबित होंगी।इसमें दो राय नहीं हो सकती कि भारत के 15वें राष्ट्रपति के रूप में वे सर्वोच्च संवैधानिक पद पद की गरिमा को कायम रखने में सर्वथा सफल सिद्ध होंगी। श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को जब भाजपा नीत राजग का सर्वसम्मत उम्मीदवार घोषित किया गया था तभी विपक्ष को यह अहसास हो गया था कि राष्ट्रपति पद के लिए श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की उम्मीदवारी का विरोध करने के लिए उसके पास कोई नैतिक आधार नहीं बचा है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने का निर्णय दरअसल राजग के सबसे बड़े घटक भारतीय जनता पार्टी ने लिया था जिस पर राजग के बाकी घटक दलों निसंकोच सहमत होना स्वाभाविक था उधर विपक्ष को राष्ट्रपति पद के लिए अपने संयुक्त उम्मीदवार का नाम तय करने में काफी मशक्कत का सामना करना पड़ा।

पहले राकांपा प्रमुख शरद पवार के नाम पर विचार किया गया परंतु उन्होंने प्रत्याशी बनने से इंकार कर दिया, इसके बाद जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री , पूर्व केंद्रीय मंत्री व नेशनल कांफ्रेंस के नेता डा फारुख अब्दुल्ला और महात्मा गांधी के पोते गोपाल कृष्ण गांधी से अनुरोध किया गया परंतु उन दोनों नेताओं ने भी राष्ट्रपति चुनाव में विपक्ष का उम्मीदवार बनने के लिए सहमति प्रदान नहीं की । अंततः पूर्व केंद्रीय मंत्री और पूर्व भाजपा नेता यशवंत सिन्हा राष्ट्रपति पद के लिए विपक्षी बनने पर राजी हो गए।

गौरतलब है कि 2018 में भाजपा से रिश्ता तोड़ने के बाद यशवंत सिन्हा ने कुछ माह पूर्व तृणमूल कांग्रेस में शामिल होकर उसके राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाली थी । तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो एवं ममता बैनर्जी की इच्छा का सम्मान करते हुए वे राष्ट्रपति पद का विपक्षी उम्मीदवार बनने के लिए राजी तो हो गए परंतु वे इस हकीकत से भलीभांति परिचित थे कि मौजूदा राजनीतिक समीकरणों को देखते हुए वे राजग उम्मीदवार श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के समक्ष कड़ी चुनौती पेश करने में असमर्थ रहेंगे। ज्यों ज्यों राष्ट्रपति चुनाव की प्रक्रिया आगे बढ़ती गई , त्यों त्यों कई गैर राजग विपक्षी दलों का समर्थन भी राजग उम्मीदवार श्रीमती मुर्मू को मिलता गया और एक स्थिति ऐसी भी आई कि राष्ट्रपति चुनाव के पूर्व ही श्रीमती मुर्मू के राष्ट्रपति निर्वाचित होना सुनिश्चित माना जाने लगा।भाजपा नीत राजग उम्मीदवार के रूप में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की जीत ने भविष्य की राजनीति के लिए भाजपा की संभावनाएं और बलवती बना दी हैं। इस जीत ने आदिवासी जनजातीय मतदाताओं के मन में इस विश्वास को जन्म दिया है

ओपी राजभर की SBSP की गठबंधन से विदाई से सपा को फायदा? अखिलेश

लखनऊः ओपी राजभर की सुभासपा के समाजवादी पार्टी गठबंधन से अलग होने के फायदे और नुकसान का आंकलन शुरू हो चुका है। इस बीच पहले इस गठजोड़ में रहे दो क्षेत्रीय दल सपा से नजदीकी बनाने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में सपा के साथ मिलकर पिछला राज्य विधानसभा चुनाव लड़ चुके जनवादी पार्टी-सोशलिस्ट और महान दल ने चुनाव में सफलता नहीं मिलने के बाद गठबंधन से नाता तोड़ लिया था। अब सुभासपा के सपा से अलग होने के बाद, अन्य पिछड़ा वर्ग के मतदाताओं में कुछ असर रखने वाली जनवादी पार्टी-सोशलिस्ट सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की प्रशंसा कर रही है। महान दल ने भी अखिलेश की तारीफ करते हुए सपा गठबंधन में दोबारा शामिल होने इच्छा जाहिर की है, हालांकि इसके लिए शर्त यह है कि सपा से स्वामी प्रसाद मौर्य को बाहर निकाला जाए। जनवादी पार्टी सोशलिस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय चौहान ने पीटीआई भाषा से बातचीत में कहा कि हम अखिलेश के साथ हैं और रहेंगे। चौहान ने पिछले महीने हुए आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा सीटों के उपचुनाव में अखिलेश पर पार्टी उम्मीदवारों के समर्थन में प्रचार नहीं करने का आरोप लगाते हुए कहा था कि वह सपा के साथ गठबंधन बनाए रखने पर पुनर्विचार करेंगे। लेकिन अब उनका लहजा बदल गया है।

इस सवाल पर कि क्या हाल ही में उनकी सपा अध्यक्ष के साथ बैठक हुई है? चौहान ने कहा कि हम बैठक करते रहते हैं और 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए पार्टी को मजबूत करने के कार्यक्रमों पर चर्चा करते हैं। हम सितंबर में लखनऊ में एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित करेंगे।चौहान ने सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर की आलोचना करते हुए कहा कि राजभर की कोई विचारधारा या सिद्धांत नहीं है। वह एक परजीवी प्राणी हैं और व्यक्तिगत हित के लिए राजनीति करते हैं। उन्होंने कहा कि राजभर सोचते थे कि अखिलेश यादव विधानसभा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री बनेंगे इसलिए वह सपा के साथ आ गए। ऐसा नहीं हुआ इसलिए अब वह भाजपा में अपना हित देख रहे हैं। अगर सपा ने उनके बेटे को विधान परिषद सदस्य बना दिया होता तो वह कुछ और समय तक गठबंधन में बने रहते।नोनिया चौहान नामक अन्य पिछड़ा वर्ग से आने वाले चौहान ने वर्ष 2019 का लोकसभा चुनाव सपा के टिकट पर चंदौली सीट से लड़ा था और बहुत कम अंतर से पराजित हुए थे।

मंकीपॉक्स वायरस को लेकर यूपी अलर्ट

सीएम योगी ने दिया कोविड अस्पतालों में दस बेड रिजर्व रखने का आदेश

गोरखपुर। प्रदेश सरकार जहां माफियाओं पर शिकंजा कसने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है वहीं पुलिस गैर जमानती वारंट तक हजम कर जा रही है। बाहुबली पूर्व विधायक राजन तिवारी के मामले में ऐसा ही चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। कुख्यात श्रीप्रकाश शुक्ला के साथ गैंगस्टर के केस में नामजद राजन तिवारी के खिलाफ 17 साल से गैरजमानती वारंट जारी होता रहा लेकिन कैंट पुलिस गिरफ्तारी तो दूर, वारंट ही गायब करती रही। 100 से ज्यादा वारंट-समन जारी हुए कोर्ट से पर पुलिस ने एक भी पहुंचाया नहीं। 17 साल से चल रहा था पूर्व विधायक राजन तिवारी के मुकदमे में पुलिस का खेल।यूपी के टॉप 61 माफियाओं की सूची में बाहुबली राजन तिवारी का नाम शामिल होने के बाद मुकदमों की पड़ताल शुरू हुई तो पुलिस का खेल सामने आ गया। यही नहीं जिस कैंट थाने में यह केस दर्ज हुआ था, वहां से फाइल भी गायब हो गई। अफसरों के जवाब मांगने पर कैंट पुलिस अपने यहां दर्ज सभी मुकदमों में राजन तिवारी को क्लीनचिट देती रही। खेल खुलने के बाद अफसरों ने सख्ती की तब गैर जमानती वारंट के आधार पर पुलिस ने राजन की तलाश शुरू की है। दरअसल, 15 मई 1998 को कैंट पुलिस ने शिव प्रकाश उर्फ श्रीप्रकाश शुक्ला, अनुज सिंह, राजन उर्फ राजेन्द्र तिवारी और आनंद पाण्डेय सहित चार लोगों पर गैंगस्टर एक्ट में कार्रवाई की थी। इसमें श्रीप्रकाश शुक्ला को गैंग लीडर तो अन्य को सक्रिय सदस्य बनाया गया था। इस मामले में राजन तिवारी के हाजिर न होने पर 14 दिसम्बर 2005 को कोर्ट ने गैर जमानती वारंट जारी किया। तब से सौ से ज्यादा वारंट जारी हुए. पर कैंट पुलिस के रिकार्ड में कभी पहुंचे ही नहीं। रिकार्ड में चढ़ाए बिना ही वारंट गायब करने का खेल 2022 तक चलता रहा। योगी सरकार 2.0 में शिकंजा कसने के लिए प्रदेश के सभी जिलों से माफिया और बड़े बदमाशों की सूची बनी तो इसमें पूर्व के मुकदमों के आधार पर गोरखपुर के रहने वाले पूर्व विधायक राजन तिवारी का नाम भी शामिल किया गया। राजन के मुकदमों का ब्योरा जुटाने और अब तक हुई कार्रवाई के आंकलन में पुलिस जुटी तो कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। पता चला कि गोरखपुर की कैंट पुलिस अपने रिकार्ड में पूर्व विधायक को क्लीनचिट देती रही।

भाजपा-जदयू के अंदर कुछ खास चल रहा है क्या? अमित शाह के बिहार आने का क्यों हो रहा इंतजार

पटना। क्या सचमुच बिहार में एनडीए के दो बड़े घटक दलों-भाजपा और जदयू में सबकुछ ठीक चल रहा है? यह सवाल अब राजनीतिक गलियारे से बाहर निकल कर आम लोगों के बीच पहुंच गया है। वजह, भाजपा उन प्रसंगों को सार्वजनिक मंच पर उठाने से परहेज नहीं कर रही है, जो जदयू के लिए अप्रिय है। इस संदर्भ में फुलवारीशरीफ की घटना नई है। वहां पुलिस ने कुछ ऐसे लोगों को पकड़ा, जिन पर देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने का संदेह है। ये पापुलर फ्रंट आफ इंडिया के सदस्य हैं। फिलहाल इस मामले की जांच की जिम्मेवारी एनआइए (ठकअ) को सौंप दी गई है। इस प्रकरण में पटना के सीनियर एसपी मानवजीत सिंह ढिल्लों की टिप्पणी पर भाजपा ने गहरी आपत्ति जाहिर की। ढिल्लों ने पकड़े गए लोगों के हवाले से कहा था कि पीएफआई भी आरएसएस (फरर) की तरह लोगों को शारीरिक प्रशिक्षण देता है। बाद में ढिल्लों ने सफाई दी कि उन्होंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा। वही कहा जो पकड़े गए लोगों ने पूछताछ के दौरान कहा था।

कविता

कहै कबीर दीवाना-ओशो

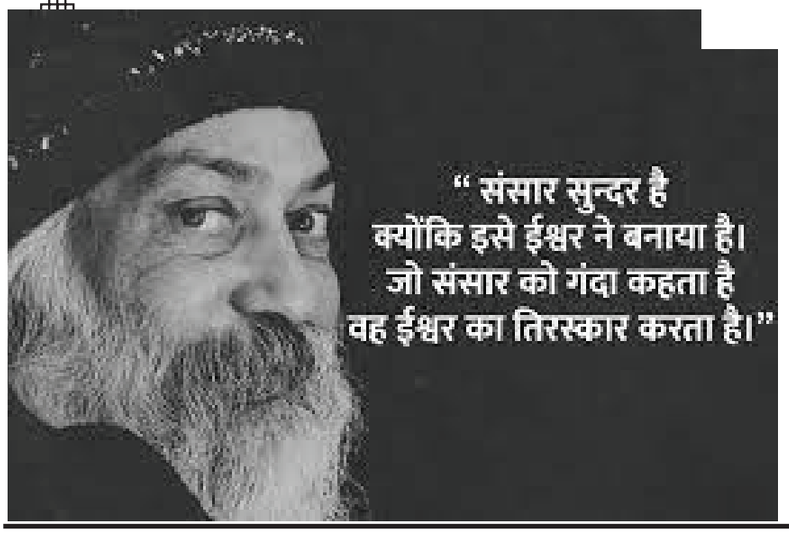

लेकिन परमात्मा को पाना है। लगता है अपने को खोने को तैयार हूं, लेकिन तुम्हें अब और खोए रहने को तैयार नहीं। सब चुकाने को राजी हूं, लेकिन तुमसे मिलना होना ही चाहिए, जिस दिन सारा जीवन-मरण दांव पर लगता है, जिस दिन हम जीते हैं तो उसके लिए, और मरते हैं तो उसके लिए, उस दिन फिर पल भर भी उसकी याद नहीं भूलती।

सोते जागते भी प्रेमी प्रेयसी की ही याद करता है। गालिब का कोई पद है, कि रात आंख नहीं झपकाता; क्योंकि पता नहीं उसी क्षण तुम्हारा आना हो जाए। पता नहीं मैं सोया रहूं, तुम द्वार पर दस्त दो और लौट जाओ। बड़ी बेचैनी की दशा हो जाती है की। पत्ते खड़खड़ाते हैं, लगता है, प्रेयसी आई कि प्रेमी आया। हवा का झोंका गुजरता है वृक्षों से, प्रेमी द्वार खोल कर देखता है, शायद आना हो गया। राहगीर गुजरते हैं, पदचाप सुनाई पड़ती है, प्रेमी भागा द्वार के पास पहुंच जाता है **जारी...**

शिलाजीत और केसर खाने से शरीर को मिलते हैं ये जबरदस्त फायदे

शिलाजीत और केसर दोनों ही बहुत शक्तिशाली और फायदेमंद औषधियां मानी जाती हैं। इनका सेवन पुरुष और महिला दोनों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। शिलाजीत पहाड़ों में पाया जाने वाले एक खनिज है जो भारत के हिमालय की पहाड़ियों में सबसे ज्यादा पाया जाता है। वहीं केसर एक औषधि है, जिसकी खेती की जाती है। भारत में सबसे ज्यादा केसर कश्मीर में होता है। इन दोनों औषधियों का सेवन करने से पुरुषों की कई गंभीर समस्याओं में फायदा मिलता है। शिलाजीत और केसर दोनों की तासीर गर्म मानी जाती है। सर्दी के मौसम में इसका सेवन बहुत से लोग करते हैं। शारीरिक शक्ति बढ़ाने और मदार्ना कमजोरी को दूर करने के लिए शिलाजीत और केसर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है।पहाड़ियों में मिलने वाली शिलाजीत में एक विशेष तरह की न्यूरोप्रोटेक्टिव क्वालिटी होती है, जो कई गंभीर मानसिक समस्याओं और बीमारियों में बहुत फायदेमंद मानी जाती है। इसका सेवन पुरुषों की कमजोरी को दूर करने के लिए बहुत फायदेमंद होता है। वहीं केसर में मौजूद गुण शारीरिक शक्ति बढ़ाने के साथ ही स्किन और दिमाग के लिए भी फायदेमंद होते हैं। शिलाजीत और केसर दोनों का एकसाथ सेवन करने से शरीर को मिलने वाले फायदे इस

तरह से हैं 1. मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए शिलाजीत और केसर दोनों ही बहुत फायदेमंद माने जाते हैं।

इसका सेवन करने से याददाश्त बढ़ती है और मानसिक समस्याओं में फायदा मिलता है।2. पुरुष और महिला दोनों के लिए शिलाजीत और केसर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। इसका सेवन करने से शारीरिक क्षमता और प्रजनन क्षमता बढ़ती है। 3. महिलाओं के पीरियड्स में शिलाजीत और केसर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। अनियमित पीरियड्स की समस्या में इन दोनों औषधियों का इस्तेमाल फायदेमंद माना जाता है। 4. माइग्रेन या क्रोनिक सिरदर्द की समस्या में भी शिलाजीत और केसर का सेवन फायदेमंद होता है। शिलाजीत, चंदन और केसर का पेस्ट लगाने से पुराना सिरदर्द दूर हो जाता है।

5. नींद से जुड़ी परेशानियों में शिलाजीत और केसर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। इसका सेवन करने से दिमाग शांत रहता है और पर्याप्त नींद आती है।शिलाजीत और केसर में मौजूद तत्व-शिलाजीत में शरीर के लिए फायदेमंद 86 प्रकार के खनिज तत्व और गुण पाए जाते हैं। इसमें शिलाजीत में आयरन, जिंक, मैग्नीशियम आदि मौजूद होते हैं। वहीं केसर में पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी, पोटैशियम, फाइबर, प्रोटीन, मैगनीज, आयरन, विटामिन ए, सी आदि पाए जाते हैं। इसके अलावा केसर और शिलाजीत में कई ऐसे गुण मौजूद होते हैं, जो शरीर की बीमारियों को दूर करने का काम करते हैं। शिलाजीत और केसर दोनों को ही पुराने समय से आयुर्वेद में औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। चरक संहिता समेत कई आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसके इस्तेमाल के बारे में बताया गया है।केसर और शिलाजीत का सेवन करने से शरीर को कई अन्य फायदे मिलते हैं।

शमशेरा के फ्लॉप होने के पीछे हैं ये 6 कारण, क्या आलिया भट्ट भी हैं वजह!

रणबीर कपूर की फिल्म शमशेरा बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह से पिट चुकी है। 4 साल बाद सिनेमाघरों में वापसी कर रहे रणबीर से फैंस को काफी उम्मीदें थीं पर सबको तोड़ते हुए शमशेरा इस साल की फ्लॉप फिल्मों की लिस्ट में शामिल हो चुकी है। पहले दिन 10.25 करोड़ की ओपनिंग लेने वाली फिल्म हर रोज बॉक्स ऑफिस पर गिरावट दर्ज कर रही है। आलम ये है कि 6वें दिन शमशेरा ने टिकट खिड़कियों पर बामुश्किल 2.30 का कलेक्शन ही कर पाई। 6 दिनों में भी रणबीर कपूर और संजय दत्त की ये फिल्म 40 करोड़ का आंकड़ा पार नहीं कर पाई। इतने बड़े स्टार, बड़े बैनर के बाद भी आखिर शमशेरा फ्लॉप क्यों हो

गई?शमशेरा के फ्लॉप होने की कहानी 24 जून को ही लिखी जा चुकी थी, जिस दिन इस फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ था। ट्रेलर को देखने वालों की समझ में आ गया था कि फिल्म में सिर्फ डायलॉगबाजी है और कुछ नहीं। वाणी कपूर ने फिल्म में कोल्ड शोल्डर टॉप पहना जिसका जमकर मजाक बना। संजय दत्त की अजीब सी डायलॉग डिलेवरी भी सोशल मीडिया पर लोगों के मजाक का केंद्र बनी। कुल मिलाकर ट्रेलर ही लोगों को इम्प्रेस करने में नाकाम रहा था। अपनी पहली फिल्म सांवरिया से ही रणवीर की इमेज एक लवर बॉय वाली बन गई है। रॉकस्टार, वेक अप सिड, ये जवानी है दीवानी जैसी फिल्मों की सफलता ने इसे और भी पक्का कर दिया। ऐसे में उन्हें 4 साल बाद की कमबैक वाली फिल्म में आप डकैत बता दें, तो सोचिए फैंस का क्या होगा। उन्होंने एक्टर को ऐसे लुक में एक्सेप्ट करने से इनकार कर दिया। शमशेरा में संजय दत्त को विलेन के तौर पर दिखाया गया। इससे पहले भी दर्शक इन्हें अग्निपथ और केजीएफ 2 जैसी फिल्मों में भी निगेटिव किरदार निभाते देख चुके हैं। लोगों ने उनके कैरेक्टर को नई बोतल में पुरानी शराब जैसा माना और नकार दिया।शमशेरा के लिए सबसे हानिकारक रहा केजीएफ 2 के साथ उनकी तलुना। सोशल मीडिया पर लगातार इसे लेकर बहस चली कि अगर शमशेरा केजीएफ 2 से पहले रिलीज की जाती तो इसके हिट होने के चांस ज्यादा थे। रॉकी भाई से रणबीर की तुलना की जाने लगी और बस यहीं मात खा गए शमशेरा। फिल्म अपने फर्स्ट लुक के साथ ही विवादों में छा गई थी। समाज के विशेष वर्ग को संजय दत्त के लुक और माथे पर लगे को टीके को लेकर काफी बवाल हुआ था। सोशल मीडिया पर इसे लेकर बॉयकॉट की मुहीम भी चलाई गई थी।

एक ओवर में ऐसा क्या करना चाहते थे शुभमन गिल जो उन्हें हो रहा है पछतावा

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज में भारत ने शिखर धवन की कप्तानी में वो कमाल कर दिया जो आज से पहले कोई भी कप्तान नहीं कर पाया था। भारत ने वेस्टइंडीज के खिलाफ क्लीन स्वीप किया। बारिश से बाधित 36 ओवर के मैच में भारत ने शुभमन गिल के नाबाद 98 रनों की पारी के दम पर 3 विकेट खोकर 225 रन बनाए थे जिसके जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 26 ओवर में केवल 137 रन बनाकर ढेर हो गई। भारत ने यह मुकाबला 119 रनों से और

सीरीज 3-0 से अपने नाम कर लिया।इस वनडे सीरीज में भारत के ओपनिंग बल्लेबाज शुभमन गिल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3 मैचों में 102.50 की औसत से 205 रन बनाए। उन्हें ह्यमैन आफ द मैचह्व के साथ ह्यमैन आफ द सीरीजह्व का खिताब दिया गया। आखिरी मैच की बात करें तो उन्होंने 98 गेंदों पर 98 रनों की नाबाद पारी खेली। यह उनके वनडे करियर का सर्वाधिक स्कोर है हालांकि वह अपने पहले शतक से केवल 2 रनों से चूक गए। नाबाद 98 रन बनाने के बावजूद भी शुभमन खुश नहीं दिखे। मैच के बाद उन्होंने कहा कि 1 ओवर और रहता तो वह अपना शतक पूरा कर लेते। मैं आशा कर रहा था कि अपना शतक पूरा करुंगा लेकिन बारिश मेरे कंट्रोल में नहीं था। मैं जिस तरह से पहले दो मैचों में आउट हुआ वह बेहद निराशाजनक था। मैं केवल एक और ओवर चाहता था जिससे मैं अपना शतक पूरा कर सकूं। विकेट की बात करें तो तीनों मैचों में शानदार विकेट था। मैं अपने प्रदर्शन से खुश हूंह्व अब टीम इंडिया, वेस्टइंडीज के खिलाफ 5 मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी जिसकी शुरूआत 29 जुलाई से हो रही है। हालांकि शुभमन गिल शानदार प्रदर्शन के बाद भी इस टीम का हिस्सा नहीं होंगे।

सुप्रीम कोर्ट में बीसीसीआई की याचिका पर सुनवाई आज, कार्यकाल संबंधी नियमों को लेकर फैसला

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में बीसीसीआई की कार्यकाल संबंधी बढ़ाने को लेकर की गई याचिका को लेकर सुनवाई गुरुवार को होनी है। इस सुननाई पर निर्भर करेगा कि बीसीसीआई प्रेसिडेंट सौरव गांगुली और सचिव जय शाह का कार्यकाल आगे बढ़ेगा या फिर उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ेगा। बीसीसीआई ने 2020 में ह्यकूलिंग आफ पीरियडह्व नियमों में संशोधन करने के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की थी।

इस याचिका में सौरव गांगुली और जय शाह का कार्यकाल बढ़ाने संबंधी निर्देश देने की मांग की गई थी।वर्तमान में 6 साल से ज्यादा कोई पद पर बने रहने के बाद उन्हें 3 साल का ब्रेक लेना पड़ता है और सितंबर में गांगुली और जय शाह का 6 साल का कार्यकाल पूरा हो जाएगा इसलिए बीसीसीआइ ने कार्यकाल में छूट देने के लिए और ब्रेक संबंधी नियमों को खत्म करने के लिए बदलाव की अपील की है।सुप्रीम कोर्ट

से मान्य बीसीसीआइ के संविधान के अनुसार राज्य क्रिकेट संघ या बीसीसीआइ या दोनों में लगातार छह साल के कार्यकाल के बाद पदाधिकारियों को तीन साल के ब्रेक से गुजरना होगा। 2019 में बीसीसीआइ अध्यक्ष बनने से पहले गांगुली बंगाल क्रिकेट और जय शाह गुजरात क्रिकेट की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इससे पहले बीते 21 जुलाई को इस सुनवाई को एक हफ्ते के लिए टाल दिया गया था। उस दिन प्रधान न्यायाधीश एनवी रमणा, न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की पीठ ने सीनियर एडवोकेट मनिंदर सिंह को नया नए न्याय मित्र घोषित किया जो इस मामले की देखरेख के लिए बनाए गए हैं। उन्हें यह जिम्मेदारी इसलिए दी गई थी क्योंकि पूर्व न्याय मित्र पीएस नरसिम्हा अब सुप्रीम कोर्ट में बतौर जज कार्य कर रहे है।

साउथ अफ्रीका और इंग्लैंड के बीच पहले टी20 में जमकर बरसे रन, लगे 29 छक्के

नई दिल्ली। वर्तमान में वनडे क्रिकेट के भविष्य को लेकर चचाएं तैर रही हैं कोई कह रहा है कि वनडे क्रिकेट को बंद कर देना चाहिए तो कोई कह रहा है कि इसके फार्मेट में बदलाव कर देना चाहिए और ऐसे समय में एक ऐसा टी20 मैच हो जाता है जिसमें छक्कों की बारिश होती है और जमकर रन बरसते हैं। इंग्लैंड और साउथ अफ्रीका के बीच पहले टी20 मैच में 29 छक्के लगे जिसने एकबार फिर साबित किया कि टी20 क्रिकेट कितनी तेजी से फैंस को अपने रंग में रंगता जा रहा है।

काउंटी क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए मैच में 427 रन बने। इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए इस मैच में जानी बेयरस्टो के 90 और मोइन अली के 18 गेंदों पर खेली गई 52 रन की विस्फोटक पारी के दम पर 6 विकेट पर 234 रन बनाए। जवाब में साउथ अफ्रीका की टीम तमाम प्रयासों के बावजूद भी इस लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाई और इंग्लैंड ने 41 रन से मैच जीत लिया। साउथ अफ्रीका की तरफ से युवा बल्लेबाज ट्रिस्टन स्टब्स ने 28 गेंदों पर 72 रन जबकि रीजा हैंड्रिक्स ने 33 गेंदों पर 57 रन बनाए। बावजूद इसके टीम 8 विकेट खोकर 193 रन ही बना सकी। इस मैच में चौकों की तुलना में छक्के ज्यादा लगे। दोनों टीमों की तरफ से कुल 29 छक्के लगे जिसमें से 20 छक्के इंग्लैंड की तरफ से और 9 छक्के साउथ अफ्रीका की टीम की तरफ से लगे। चौकों की बात करें तो 28 चौके लगे। वनडे सीरीज की बात करें तो दोनों देशों के बीच 3 मैचों की सीरीज 1-1 की बराबरी पर रहा था।

संजय राउत को महाराष्ट्र में पुनः सत्ता परिवर्तन की उम्मीद, एकनाथ शिंदे बोले-166 विधायकों का समर्थन हासिल

मुंबईः शिवसेना संसदीय दल के नेता (उद्धव गुट) संजय राउत ने महाराष्ट्र में दुबारा सत्ता परिवर्तन होने की उम्मीद जताई है। उन्होंने गुरुवार को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला से मिलकर उन 12 लोकसभा सदस्यों की सदस्यता रद करने की मांग की है, जो 10 दिन पहले ही उद्धव गुट से बगावत कर मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के गुट में जा मिले हैं। वहीं, सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि उन्हें 166 विधायकों का समर्थन हासिल है।

संजय राउत ने लोकसभा अध्यक्ष से मिलने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि हमने शिवसेना के 12 बागी सदस्यों की सदस्यता रद करने की मांग लोकसभा अध्यक्ष से की है। जबकि 10 दिन पहले ही शिवसेना के नए गटनेता के रूप में लोकसभा अध्यक्ष से मान्यता पा चुके सांसद राहुल शेवाले का कहना है कि शिवसेना के 12 सांसदों ने कोई नया गुट बनाया ही नहीं है। उन्होंने सिर्फ विनायक राउत को गटनेता पद से हटाकर अपना नया नेता चुना है। 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद पार्टी अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने विनायक राउत को लोकसभा में व संजय राउत को राज्यसभा में पार्टी का नेता नियुक्त किया था। इसके अलावा संजय राउत को लोकसभा एवं राज्यसभा

मिलाकर संसदीय दल का नेता भी नियुक्त किया था।

हाल ही में पार्टी में बड़े पैमाने पर बगावत के बाद शिवसेना के 12 सांसदों ने अपना गटनेता व मुख्य सचेतक बदलने की मांग लोकसभा अध्यक्ष से की थी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने 19 जुलाई को यह मांग मानते हुए राहुल शेवाले को शिवसेना के गटनेता व भावना गवली को मुख्य सचेतक के रूप में मान्यता प्रदान कर दी है। राउत ने वीरवार को पत्रकारों से बात करते हुए राज्य में दुबारा सत्ता परिवर्तन होने की उम्मीद भी जताई। उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश संविधान एवं कानून के विरोध में कोई फैसला नहीं देंगे। हमें विश्वास है कि 16 विधायक (एकनाथ शिंदे सहित उनके गुट के 15 और विधायक) जरूर अपात्र ठहरा दिए जाएंगे। राउत का मानना है कि अपनी विधानसभा सदस्यता बचाने के लिए शिंदे गुट में गए सभी विधायकों को किसी दूसरे दल में शामिल होना होगा। लेकिन तब वे खुद को शिवसैनिक नहीं बता पाएंगे।

URGENTLY REQUIRED FEMALE STAFF
VACANCY VACANCY
ICON OPTICAL GALLERY
Urgently Required Female Staff
Accountant Cum Sales Girl For
Counter Sell.
Note : Must Have Computer Operating Knowledge
Contact Us : 9819292152
Shop No. 52, R.N.A. Arcade, Lokhandwala Complex, Andheri (West), Mumbai - 400 053
murtaza12152@yahoo.com

TASNEEM COLLECTION
Online Shopping Hub
Only of Ladies Bags, Kurtis, Accessories
Kitchen & Household items
Baby products
Plastic items
And much more.....all under one roof
Best business apportunity for housewives to become reseller & earn at zero investment
RH 1, C 26 row house number, Swamy Ayyappam temple road, Sector. 8, New Mumbai, Vashi-400 703
Farida Rampurawala : 8898065152

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक संपादक – मुर्तुजा मामाजीवालाा के द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, युनिट नं. 4, ग्राउंड फ्लोअर, एन. के इंडस्ट्रिअल इस्टेट , ऑफ आरे रोड , प्रवासी इंडस्ट्रिअल इस्टेट के पास , गेट नं. 2, गोरेगाव (पूर्व),मुंबई - 400063 से मुद्रित कर शिव वातुक सेना कासिम नगर नियर लक्ष्मी इस्टेट न्यू लिंक रोड, अधेरी (प),मुंबई -400053 प्रकाशित । संपादक : मुर्तुजा मामाजीवाला मों. 9819199997
■ T.C. NO. MAHHIN10172 ■ ईमेल : newsicon2021@gmail.com ■ newsicon.net